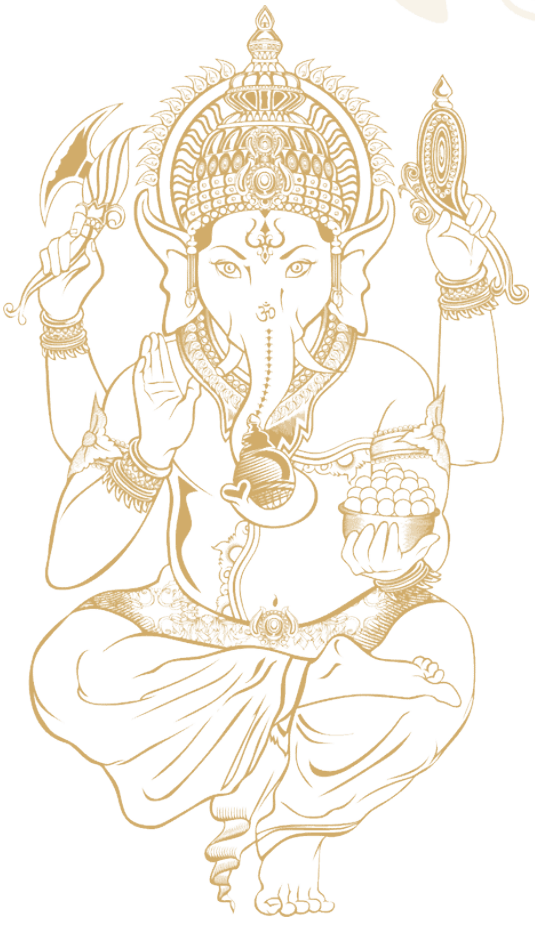

Nikhil son

06 Apr 2026

08:02 PM

Kosi Kalan

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121934501**

तिथि 06/04/2026 **समय** 20:02:00 **वार** सोमवार **स्थान** Kosi Kalan **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:32
अक्षांश 27:48:00 उत्तर **रेखांश** 77:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:41:18 घं
वेलान्तर	00:02:27 घं
सूर्योदय	06:05:39 घं
सूर्यास्त	18:40:16 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	5
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्यतिपात
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नू-नूर
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शनि 4वर्ष 10मा 17दि

शनि

06/04/2026
22/02/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/04/2026
राहु	11/08/2028
गुरु	22/02/2031

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 0मा 10दि

भ्रामरी

06/04/2026
17/04/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/04/2026
संकटा	16/08/2026
मंगला	26/09/2026
पिंगला	16/12/2026
धान्या	17/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:13:10	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	---	0:00			
सूर्य			22:34:26	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.22	अमात्य	पितृ	सम्पत
चंद्र			13:14:27	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	राहु	नीच राशि	1.44	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	03:16:18	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.13	कलत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			24:58:57	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.10	आत्मा	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			21:57:54	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.19	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			14:18:28	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.29	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि		अ	12:01:02	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	सम राशि	0.94	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु	व		14:01:31	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		14:01:31	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

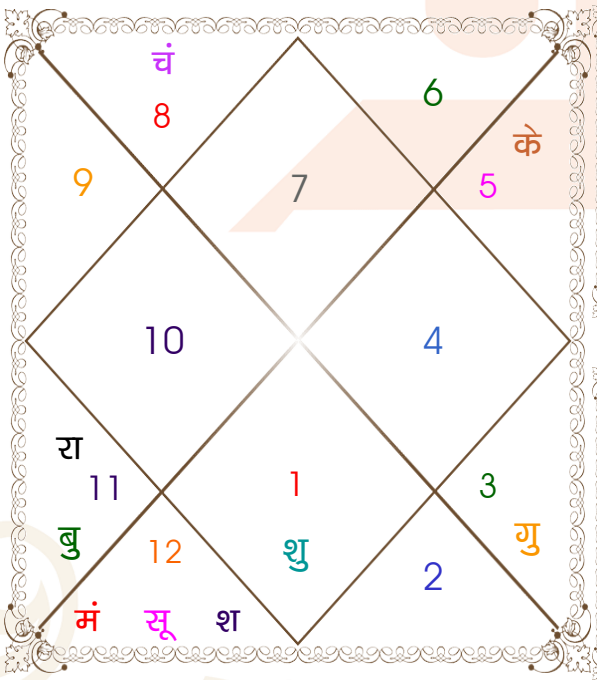

चन्द्र कुंडली

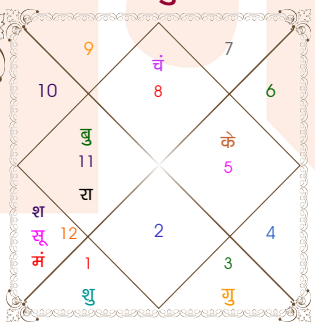

नवमांश कुंडली

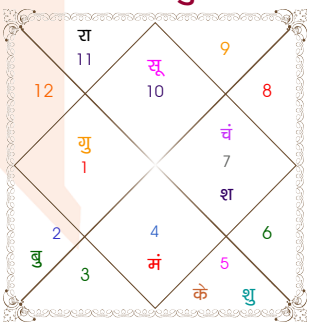

सर्वाष्टकवर्ग

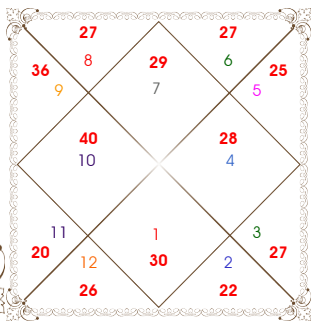

दशमांश कुंडली

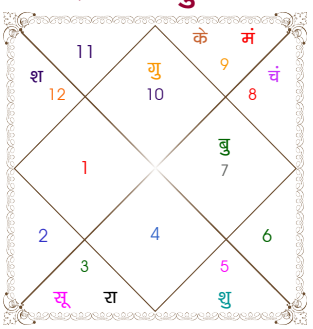

नक्षत्रफल

आप अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण देव, नाड़ी मध्य, योनि मृग तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नु" या "नू" अक्षर से होगा।

आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा परिश्रमपूर्वक अपने उद्यम संबंधी कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः समय समय पर आप देश विदेश की यात्राएं भी सम्पन्न करेंगे। आप अपने बन्धुजनों तथा समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रति अत्यन्त ही स्नेह एवं सहयोगी होंगे तथा इन लोगों की प्रत्येक कार्य के सफलता के लिए सदैव यत्नशील रहेंगे। इस प्रकार उनके हितकार्यों को करने पर आपको आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होगी तथा हृदय भी हमेशा प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आप अपने सम्भाषण में सदैव मधुर एवं प्रिय वाणी का प्रयोग करेंगे। अतः अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आप एक धनवान व्यक्ति होंगे तथा धन का आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इन सुखों का अपने जीवन में उपभोग करेंगे। आप अपने समाज में ख्याति प्राप्त या प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। आप समाज के सभी लोगों के लिए पूज्य तथा सम्माननीय व्यक्ति होंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुशोभित रहकर आप एक समर्थवान पुरूष होंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप एक धनाढ्य व्यक्ति होंगे तथा आपका अधिकांश समय घर से बाहर देश विदेश में निवास करके व्यतीत करेंगे। कभी कभी आप अपनी कार्य व्यस्तता या अन्य लौकिक हेतु से भूख से भी व्याकुल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा पिकनिक आदि कार्यक्षेत्रों में अपना काफी समय व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोडनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपका शरीर तथा मुखमंडल हमेशा कान्ति से सुशोभित रहेगा। आपकी प्रवृति उत्सव प्रिय रहेगी। अतः समय समय पर पार्टी आदि कार्यक्रमों का आप आयोजन करते रहेंगे। शत्रुओं का दमन करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे तथा वे आपसे अत्यधिक भयभीत से रहेंगे। साथ ही नाना प्रकार की कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे तथा अपने जीवन काल में विविध एवं विस्तृत धनैश्वर्य का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका सीना विशाल तथा आँखें बड़ी बड़ी होंगी। साथ ही शरीर में तनिक श्यामलता दृष्टिगोचर होगी। आपके हाथ या पैर में मत्स्यादि का चिन्ह भी होगा तथा हाथ की रेखाएं पक्षी एवं वज्र के समान आकृति वाली होगी। आपको अपने श्रेष्ठ जनों का सहयोग अल्प मात्रा में प्राप्त होगा तथा इनसे संबंध भी अल्प ही रहेंगे। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगे। बुद्धि से आप अत्यन्त चतुर तथा तीव्र होंगे अतः राज्य या सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके समस्त कार्य क्रूरतापूर्ण तथा कठोरता से सम्पन्न होंगे। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों के

अधिकारी बनेंगे। कभी कभी आप अपनी दुष्टता का भी परिचय देंगे इससे कई लोग आपके द्वारा दुःख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप गुप्त रूप से कठोरकर्म करेंगे या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उसमें सम्मिलित रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदरभाग तथा मस्तक भी आकार में विस्तृत रहेगा। आपके मन में अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति हमेशा लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। आपके शरीर में लावण्यता या कोमलता का समावेश रहेगा। आप ईश्वर एवं धर्म के प्रति अल्प मात्रा में ही आस्था प्रकट करेंगे। आपकी दाढी तथा नाखूनों में चोटादि के भी चिन्ह विद्यमान रहेंगे। धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर जीवन में आप सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में आप दक्ष होंगे तथा नित्य कुछ न कुछ कार्य करते रहेगे। बन्धु वर्ग से सहयोग आप को नाम मात्र का ही मिलेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समस्त सामाजिक जन आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं हृदय से आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपका स्वभाव भी उग्रता से युक्त रहेगा एवं समाज में अन्य जनों में भी आपकी अनुरक्ति रहेगी। इसके साथ ही सरकार के द्वारा आप धन हानि को भी प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप जीवन में विपुल धन के स्वामी बनेंगे तथा कुटुम्बी जनों के अतिरिक्त अन्य कई जनों को भी आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होगी। स्त्रियों के विषय में आप सौभाग्यवान पुरूष होंगे तथा इनसे पूर्ण आदर, सम्मान, सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही सरकारी सेवा में भी आपकी नियुक्ति हो सकेगी। दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में रहेगी तथा इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आप अत्यन्त ही दृढ़मति के व्यक्ति रहेंगे तथा जिस किसी कार्य के विषय में एक बार सोच लेंगे उसे हमेशा पूर्ण करके ही रहेंगे। साथ ही आप साहसी शूरवीर तथा निर्भय पुरूष भी होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

जीवन में यदा कदा आप जुआ आदि खेल को भी खेलने की इच्छा करेंगे परन्तु इस सब में आपको अधिक मात्रा में आर्थिक हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त उग्रस्वभाव होने के कारण आपकी प्रवृति विवाद युक्त होगी तथा अन्य जनों से आपका विवाद चलता रहेगा।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही इधर उधर भ्रमण करने के प्रिय रहेंगे। आप में अभिमान की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा सहानुभूति रहेगी। साथ ही अपने साहस तथा पराक्रम से धनार्जन करने में पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में पैदा होने के कारण आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरवाणी बोलने वाले होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आपकी मुख्य विशेषता यह रहेगी कि अपनी बातों का प्रस्तुतीकरण आप सुगमतापूर्ण ढंग से करेंगे तथा अन्य जनों के विचारों को भी सरलता से ग्रहण करेंगे। आप हमेशा अल्प मात्रा में सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ पुरूषों द्वारा प्रतिपादित उत्तम गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन धान्य ऐश्वर्य एवं वैभव का भी आपको जीवन में अभाव नहीं रहेगा तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करने में सफल रहेंगे।

आपका सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप समयानुसार करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना उपयुक्त समझेंगे। साथ ही आप एक विद्वान के रूप में समाज में प्रसिद्ध तथा सम्माननीय रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में पैदा होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा बिना

किसी हस्तक्षेप के अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना श्रेष्ठ समझेंगे। आपका मन शान्त होगा तथा झगड़ा आदि करने की प्रवृति आपके मन में नहीं रहेगी। साथ ही आपकी आजीविका सद्कार्यों के द्वारा सम्पन्न होगी। आप एक सत्यवादी व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपका पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धाभाव रहेगा। साथ ही इसका नियमपूर्वक पालन करने में भी आप प्रयत्नशील रहेंगे। आपका स्वजनों के प्रति अत्यन्त ही स्नेहशील व्यवहार रहेगा एवं उनका यत्नपूर्वक हमेशा हितसाधन करने में रत रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव स्थापित रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदाता रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शिव का पूजन करना चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए एवं सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चन्दन, गेंहू, तांबा आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मन की शान्ति मिलेगी तथा अन्य अनिष्ट फल भी कम होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।